CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th August 2021, Revised on 30th August 2021, Accepted 29th Sept. 2021

शोध–पत्र

भाषायी कौशल के वर्धन में शिक्षक के दायित्व

* **नीलम तिवारी**, *शोधार्थी*
डॉ. रचना राठौड़, *एसोसिएट प्रोफेसर*
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक
जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय) उदयपुर
Email-neelampankaj9414@gmail.com, Mob.-7014089159

मुख्य शब्द – *ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ, श्रवण, भाषण, पठन और लेखन आदि।*

प्रस्तावना

भाषा की शुद्धता के लिए व्याकरण के नियमों का अनुसरण किया जाता है। व्याकरण के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों ही पक्ष होते है। भाषा कौशल में हमारे शरीर की सभी ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ सक्रिय रहती है। कौशल की आवश्यकता व्यवहारिक, प्रयोगात्मक एवं तकनीकी सभी प्रकार के कार्यो में पड़ती है। कार्य क्षमता कार्य कौशल पर ही निर्भर करती है। कौशल का कोई रूप नहीं होता। यह विशिष्ट क्रियाओं एक समूह मात्र है। किभी भी प्रकार के कार्य को करने में विशिष्ट क्रियाएँ करनी पड़ती है जिसमें कौशल की भूमिका मुख्य होती है। जब व्यक्ति को भाषा एवं उससे सम्बन्धित कौशल का सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता है तो वह भाषा प्रयोग में भी कुशलता प्राप्त कर लेता है। भाषा के चार कौशल होते है। श्रवण, भाषण, पठन और लेखन। (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) भाषा कौशल की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है –

1. कौशल भाषा का व्यवहारिक पक्ष है।
2. भाषा कौशल में समस्त इन्द्रियाँ क्रियाशील रहती है।
3. भाषा कौशल से शाब्दिक अन्तःक्रिया सशक्त होती है।
4. भाषा कौशल सम्प्रेषण का मुख्य साधन एवं माध्यम दोनों है।
5. भाषा कौशल अभ्यास एवं प्रशिक्षण के माध्यम से अर्जित किये जाते है।
6. भाषा कौशल का उद्देश्य बोधगम्यता है।
7. भाषा कौशल में प्रत्यक्षीकरण एवं मानसिक अवस्था का महत्व होता है।
8. भाषा कौशल की प्रभावशीलता का आकलन विभिन्न कौशलों की प्राप्ति से किया जाता है।
9. भाषा कौशल के दो प्रमुख घटक होते है।
10. सम्पूर्ण भाषा कौशल प्रवाह को दो भागों में बांटा गया है – लिखना–पढ़ना और बोलना सुनना।

श्रवण कौशल

कुछ क्रियाएँ प्राणियों को नैसर्गिक रूप में प्रकृतिप्रदत्त है। इनमें सुनना प्रथम क्रिया है, कानों के माध्यम से जो ध्वनियाँ सुनी जाती है अथवा श्रवणेन्द्रियों द्वारा जो कुछ सुना जाता है, वह सुनना कहलाता है। किसी व्यक्ति अथवा ध्वनि मंत्रों द्वारा उत्पन्न सार्थक ध्वनियों को श्रवणेन्द्रियों के माध्यम से अर्थग्रहण अथवा समझने की प्रक्रिया श्रवण कहलाती है।

शिक्षा शब्दकोष में श्रवण के अर्थ को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जाता है– ''श्रवण व्यक्त अथवा अव्यक्त व्यवहार प्रतिमानों के चयनशील मौखिक एवं लिखित संकेतो को प्राप्त करने के संबंध में अन्य व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के वार्तालाप पर गहन ध्यान देने की कला है।''

श्रवण कौशल का महत्व

प्राचीन काल में शिक्षण की प्रक्रिया पूर्ण रूप से मौखिक थी। सीखने की प्रक्रिया में श्रवण का अत्यधिक महत्व था। श्लोकों, कहानियों आदि के माध्यम से ही सांस्कृतिक विरासत पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती थी। लेखन कला, कागज का निर्माण एवं मुद्रण की मशीनों का आविष्कार हो जाने पर शिष्यों ने अपने गुरूओं से श्रवण के उपरान्त कंठस्थ की गई विषयवस्तु को रचनाबद्ध किया था और मुद्रित सामग्री के मौन पठन का प्रचलन अधिक हो गया फिर भी श्रवण का अस्तित्व कम नहीं हुआ है, क्यों कि आज भी विद्यालयों में प्रतिदिन विद्यार्थियों के लिए श्रवण हेतु कई अवसर उपलब्ध है, जैसे–

1. शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के मौखिक निर्देश देना।
2. मौखिक रूप से गृह कार्य देना।
3. किसी प्रक्रिया का मौखिक वर्णन करना।
4. किसी सम्प्रत्यय की व्याख्या करना।
5. छात्रों का ध्यान विषयवस्तु की ओर आकर्षित करने के लिए उदाहरण एवं दृष्टान्त प्रस्तुत करना आदि।

वर्तमान समय में तकनीकी क्षेत्र में एक उत्तरोत्तर विकास के रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर एवं मल्टीमीडिया के अन्य साधनों जैसे कार्टून एवं एनीमेशन के विकसित हो जाने के कारण श्रवण का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

श्रवण के आवश्यक तत्व

विद्यार्थियों में निम्न तत्वों का होना आवश्यक है जिसके माध्यम से शिक्षक द्वारा कहे गये वाक्यांशो का भाव स्पष्ट हो जाए–

1. विद्यार्थी की श्रवणेन्द्रिय (कान) में कोई विकार नहीं होना चाहिए।
2. विद्यार्थी में भाषा की ध्वनियों, ध्वनि समूहों, शब्दों का का ज्ञान होना आवश्यक है।
3. विद्यार्थियों में मूल ध्वनियों एवं ध्वनि समूहों के अन्तर करने की योग्यता होनी चाहिए।
4. विद्यार्थी में सुनने की तत्परता, सुनने में उसकी रूचि एवं अवधान का होना आवश्यक है।
5. विद्यार्थी में धेर्य एवं मनोयोग से सुनने की आदत होनी चाहिए।
6. विद्यार्थी मे बोलने वाले के हाव– भाव के अनुसार अर्थ एवं भाव समझने की योग्यता हो।
7. विद्यार्थी में सुने हुए का अर्थ एवं भाव समझने की योग्यता होनी चाहिए।

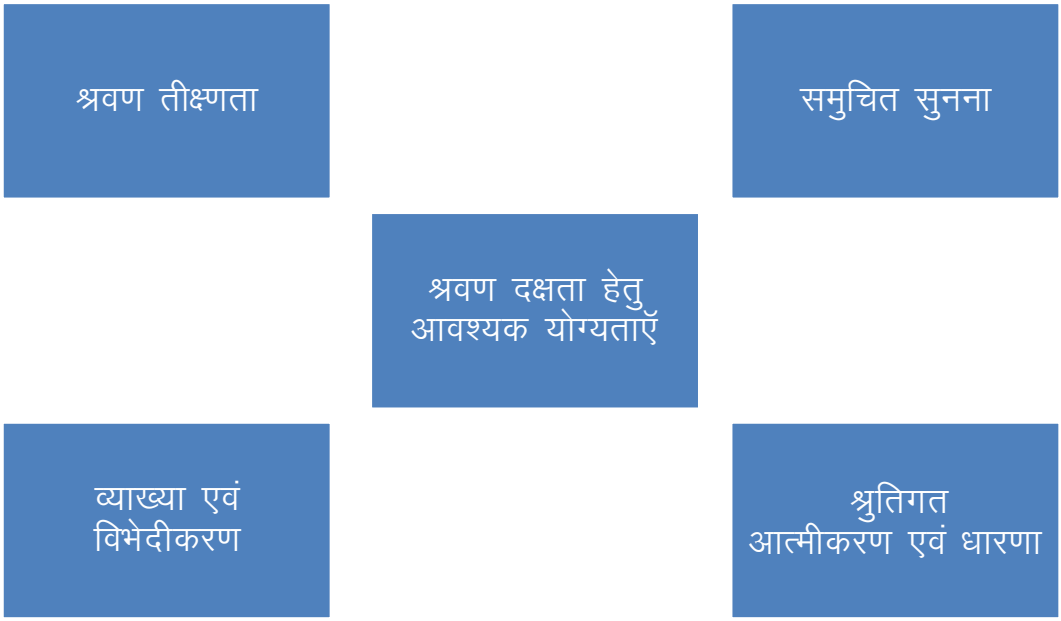

श्रवण दोष के कारण

छात्र जब शिक्षक या किसी व्यक्ति एवं ध्वनि यंत्र द्वारा उच्चारित सार्थक शब्दों अथवा ध्वनियों का श्रवण करके अर्थ ग्रहण करने में असमर्थ रहता है, तो यह श्रवण दोष कहलाता है। जैसे ब्राह्मणः को ब्रामण तथा किंकर्तव्यविमूढ़ः को किंकव्यविमूढ़ सुनना आदि। श्रवण दोष के निम्नलिखित कारण हो सकते है –

1. अशांत वातावरण।
2. श्रवणेन्द्रियों में विकार।
3. ध्यानकेन्द्रित न होना।
4. पाठ्यवस्तु का कठीन होना।
5. शिक्षक का अध्यापन में रूचि न लेना।
6. कक्षा का कठोर नियंत्रण।
7. मौखिक कार्य/अभ्यास कार्य का अभाव।
8. एक साथ अनेक कार्य।
9. पढ़ने में अरूचि।

श्रवण दोषों को दूर करने के उपाय

श्रवण दोषों को निम्नलिखित प्रकार से दूर किया जा सकता है –

1. शान्त वातावरण स्थापित करके।
2. श्रवणेन्द्रियों का उपचार करवाकर।

3. ध्यान केन्द्रित करके।
4. पाठ्यवस्तु में मनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियों का उपयोग करके।
5. शिक्षकों में संस्कृत शिक्षण के प्रति रूचि विकसित करके।
6. कक्षा का वातावरण स्वस्थ बनाकर।
7. मौखिक कार्य/अभ्यास को प्रोत्साहित करके।
8. एक साथ अनेक कार्य न करके।
9. पढ़ने में रूचि का विकास करके।

श्रवण कौशल के विकास में शिक्षक का दायित्व

विद्यालयों में श्रवण कौशल के विकास का समस्त दायित्व शिक्षको पर निर्भर करता है। अन्य कौशलों के विकास के साथ साथ शिक्षक को छात्रों में श्रवण कौशल का विकास करने का प्रयत्न करना चाहिए।

1. छात्र को कक्षा में समुचित वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए।
2. छात्रों के श्रवण दोषों का पता लगाकर छात्रों की आवश्यकतानुसार सीखने के कार्य समायोजित करने चाहिए।
3. शिक्षक को छात्रों को नये शब्दों एवं विचारों को सुनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही श्रवण हेतु व्यक्तिगत रूप से अवसर प्रदान करने चाहिए।
4. छात्रों को सत् साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
5. कहानी कहना, नाटकीकरण, गीतों के गायन, श्लोकों एवं कविताओं के पठन आदि के माध्यम से भी श्रवण कौशल का विकास करना चाहिए।
6. छात्रों को देखो और कहो अभ्यासों, वाद विवाद, प्रहेलिका खोजने और विवेचना में संलग्न करके उत्साहित किया जा सकता है।
7. छात्रों से औपचारिक रूप से प्रकरणों पर विवेचन कराकर, प्रश्न पूछकर, योजना बनाकर, प्रतिवेदन तैयार करवाकर, समालोचना एवं मूल्यांकन आदि करवाकर अन्य छात्रों को श्रवण हेतु अवसर प्रदान कर सकते है।
8. इसके अतिरिक्त रेडियो, टेलिविजन, टेपरिकॉर्डर, कम्प्यूटर, विडियो, कार्टून एवं एनीमेशन आदि भी श्रवण कौशल के विकास में उपयोगी है।

शिक्षक उपर्युक्त क्रियाकलापों की सहायता से छात्रों को श्रवण कौशल में निपुण बना सकता है।

भाषण कौशल

भाषण कौशल का शाब्दिक अर्थ होता है– बोलना। सभी भाषाओं के शिक्षण भाषण का विशेष महत्व होता है किन्तु संस्कृत में इसका अधिक महत्व है, क्योंकि यह संश्लेषणात्मक भाषा है। बालक में संस्कृत भाषा में बोलने की कुशलता विकसित करने के लिए आवश्यक है कि बालक को अधिक से अधिक सुननं एवं तद्नुरूप बोलने का अवसर दिया जाये। भाषण एक कला है, बोलना व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण है। उसकी संस्कृति की पहचान है। मधुरवाणी का अपना अलग ही महत्व होता है क्योंकि अन्य सभी आभूषण तो टूट या घिस जाते है लेकिन वाणी एक ऐसा आभूषण है जा सदाबहार मानी जाती है। व्यक्ति का एक मात्र आभूषण उसकी मधुर वाणी ही है। मधुर वाणी अमृत के समान होती है। कहा भी गया है कि

"न तथा शीतलसलिलम् न चन्दनरसो न शीतला छाया।

प्रह्लादयति च पुरूषं यथा मधुरभाषिणी वाणी।।

अर्थात जैसे मीठी वाणी मनुष्य के हृदय को प्रसन्न करती है, वैसे न तो ठण्डा जल, न चन्दन का रस और न ही ठण्डी छाया मनुष्य के हृदय को प्रसन्न करती है।

भाषा शिक्षण की दृष्टि से भाषण के अन्तर्गत संयुक्त ध्वनियों और ध्वनि संयोजनों का उच्चारण आता है भाषण के द्वारा छात्र शब्दों या वाक्यांशो का उद्देश्य, कार्य एवं अन्य विचार जो उसके मस्तिष्क में होते है, के मध्य प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करना सीखते है। वे ध्वनियों/वर्णो को शुद्ध वाक्य सांचों में उपयोग करके उनका उच्चारण करना सीखते है। इस प्रकार बोलने में ध्वनि व्यवस्था, बल, लय, स्वराघात, गति और विराम का समुचित उपयोग करना ही भाषण है।

भाषण के प्रमुख तत्व

1. ध्वनि व्यवस्था

भारतीय वैयाकरणों ने ध्वनियों एवं उनके उच्चारण स्थानों का वैज्ञानिक विवेचन किया है। अतः संस्कृत ध्वनियो की व्यवस्था का ज्ञान होना अति आवश्यक है। छात्रों को संस्कृत की सभी 64 ध्वनियों की सही जानकारी होनी चाहिए।

2. बल

जिस शक्ति के द्वारा किसी वर्ण/ध्वनि का उच्चारण किया जाता है उसे बल कहते है। अधिक शक्ति लगाकर बोलने पर ध्वनि तेज गति तथा कम शक्ति लगाकर बोलने पर ध्वनि धीमी गति से बाहर निकलती है। यह बल की मात्रा को प्रर्दशित करता है। इसे (') चिह्न से प्रर्दशित करते है। बल तीन प्रकार का होता है

- अक्षर/वर्ण बल
- शब्द बल
- वाक्य बल।

3. लय

उच्चारण के साथ लय का होना आवश्यक माना गया है, क्योंकि लय के साथ किया गया उच्चारण प्रभावपूर्ण होता है। एक अक्षर बोलने के बाद दूसरा अक्षर बोलने के मध्य समान समय देने को लय कहते है ।

4. स्वाराघात

उच्चारण में ध्वनियों के समुचित आरोह अवरोह को स्वराघात कहा जाता है। अतः छात्रों को इसका अभ्यास कराना चाहिए।

5. गति

शब्द समूह के मध्य बिना रूकावट के बोलना गति कहलाती है। सामान्य गति अच्छी मानी जाती है। छात्रों को सामान्य गति से बोलने का प्रशिक्षण देना चाहिए।

6. विराम

विराम का अर्थ है एक क्षण के लिए रूकना, अर्थात् बड़े बड़े वाक्यों को शुद्ध पढ़ने के लिए यथास्थान विराम चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इनका ध्यान रखकर पढ़ने से उच्चारण में गति बनी रहती है।

उच्चारण दोष के प्रकार

संस्कृत भाषा में उच्चारण दोष के अनेक प्रकार है। पाणिनी ने उच्चारण दोष के बारे में लिखा है –

"उपांशुदष्टम् त्वरितं निरस्तम्, विलम्बितं गद्गदितं प्रगीतम्।

निष्पीडितम् ग्रस्तपदाक्षरं च, वेदन्नदीनं न तु सानुनास्यम् ।।"

1. **उपाशुदष्टम्** :– वर्णो को जीभ दबाकर उच्चारण करना या मुख से काट देना।
2. **त्वरितं** :– जल्दी जल्दी बोलना।
3. **निरस्तम्** :– मुँह से फेकते हुए बोलना।
4. **विलम्बितम्** :– रूक रूककर बोलना।
5. **गद्गदितम्** :– गद् गद् अर्थात् दबे स्वर में बोलना।
6. **प्रगीतम्** :– गा गाकर बोलना।
7. **निष्पीडितम्** :– तुतलाकर/हकलाकर/बुदबुदाकर बोलना।
8. **ग्रस्तपदाक्षरं** :– अक्षरों या वर्णो को बीच बीच में ग्रसित करके बोलना।
9. **दीनम्** :– दीनता के स्वर में बोलना।
10. **सानुनास्यम** :– सभी वर्णो को नाक से मिनियाकर बोलना।

शुद्ध उच्चारण का महत्व

महर्षि पातंजलि ने महाभाष्य में लिखा है – **"एको शब्दः सम्यग्ज्ञातः, सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोकेकाम धुग्भवति।"** अर्थात् एक ही शब्द जा अच्छी तरह जाना हो जिसका अच्छी तरह प्रयोग किया गया हो, इस लोक एवं परलोक में इच्छाओं की पूर्ति करने वाला होता है।

वेदाध्ययन में उच्चारण का विशेष महत्व था। इसलिए गुरू वेदों को अपने शिष्य को व्यक्तिगत रूप से पढ़ाता था। शिक्षा नामक वेदांग में उच्चारण स्थान, आभ्यन्तर प्रयत्न, बाह्यीय प्रयत्न, शुद्धोच्चारण के नियम, वाक्यों का शब्दों में विश्लेषण तथा पदच्छेद आदि।

1. शुद्धोच्चारण के बिना छात्र संस्कृत का वास्तविक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। अशुद्ध ध्वनि उत्पति भाषा का अशुद्ध रूप ही प्रस्तुत करती है। जिससे अर्थ का सही बोध नहीं होता है।
2. अशुद्ध उच्चारण ही अशुद्ध अक्षर विन्यास का कारण होता है।
3. अशुद्ध अभिव्यक्ति अशुद्ध अबोधगम्यता का भी कारण बनता है।
4. अशुद्ध उच्चारण भारी अपमान का कारण बनता है। जब एक प्रबुद्ध वक्ता ''श्'' के स्थान पर ''स्'' और ''स्'' के स्थान पर ''श्'' का उच्चारण करता है तो अपमानजनक स्थिति उत्पन्न होती है।
5. यदि प्रारम्भिक अवस्था में ही उच्चारण के दोषों को दूर नहीं किया जाता है तो वे भविष्य में परिपक्व होकर असाध्य बन जाते है।
6. अशुद्ध उच्चारण शब्दार्थ मे भी परिवर्तन कर देता है जैसे अधीनः स्याम् शरदः शतम् के स्थान पर दीनः स्याम् शदरः शतम्।

अशुद्ध उच्चारण के कारण

1. संस्कृत ध्वनियों एवं उच्चारण स्थानों का अपूर्ण ज्ञान होना।
2. उच्चारण तत्वों के ज्ञान का अभाव।
3. शारीरिक दोष ध्वनि यंत्रों में विकार।
4. शिक्षा पद्धति में परिवर्तन।
5. क्षेत्रीयता का प्रभाव।
6. पारिवारिक कारण। वशांनुगत प्रभाव, अशिक्षित परिवार।
7. त्रुटिपूर्ण अभ्यास।
8. अशुद्ध उच्चारण वाले शिक्षकों का प्रभाव।
9. अशुद्ध उच्चारण वाले सहपाठियों का प्रभाव।

अशुद्ध उच्चारण दूर करने के उपाय

1. संस्कृत ध्वनियों एवं उनके उच्चारण का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना।
2. उच्चारण तत्वों – मात्रा, लय, बल, स्वराघात, विराम, गति और शक्ति का प्रशिक्षण प्राप्त करना।
3. शारीरिक दोषों को चिकित्सा पद्धति द्वारा दूर करना।
4. सभी शिक्षा पद्धतियों में उच्चारण सम्बन्धी समानता लागु करना।
5. क्षेत्रीयता के प्रभाव को अभ्यास द्वारा दूर करना।
6. अशिक्षित परिवारों की शिक्षा व अन्य समस्याओं का समाधान करना।
7. छात्रों को शिक्षकों/ध्वनि मशीनों द्वारा शुद्ध व बार बार अभ्यास कराना।
8. अशुद्ध उच्चारण वाले शिक्षकों को शुद्ध उच्चारण का विशेष प्रशिक्षण देना।
9. अशुद्ध उच्चारण वाले छात्रों का उच्चारण शिक्षकों द्वारा शुद्ध कराना।
10. प्रभावशाली भाषा प्रयोगशाला का निर्माण करके जिसमें सम्भव हो तो इलेक्ट्रोपेलेटोग्राफ (विद्युतीय तालुदर्शी) मशीन की व्यवस्था करके शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना।

भाषण कौशल के विकास में शिक्षक का दायित्व

भाषण कौशल के विकास के लिए शिक्षक को निम्नलिखित प्रयास करने चाहिए–

1. छात्र को मधुरवाणी एवं प्रभावी ढ़ंग से उतार–चढाव के साथ भाषण का अभ्यास कराया जाय।
2. छात्रों को सुन्दर एवं प्रवाहमय तरीके से भाषण करना सिखाया जाय।
3. छात्रों को गति, लय व उचित हाव–भाव के साथ भाषण का अभ्यास कराया जाय।
4. छात्रों को विभिन्न शब्दों को उचित बल एवं विराम चिन्हों आदि के प्रयोग के साथ पढ़ना सिखाया जाय।
5. छात्रों को प्रत्येक अक्षर का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण का ज्ञान कराया जाय।

अवलोकित सन्दर्भ

1. मिश्र महेंद्र कुमार 2008 : संस्कृत शिक्षण, इण्डियन बुक डिपो जयपुर ।
2. सिह रामकिशोर 2017 : पाठ्यक्रम में भाषा, आर लाल बुक डिपो मेरठ ।
3. अग्रवाल शिखा 2017 : हिंदी शिक्षण शास्त्र, आर लाल बुक डिपो मेरठ ।
4. मिश्र संत कुमार 2012 : संस्कृत शिक्षण, आर लाल बुक डिपो मेरठ ।
5. **Paliwal.A.K.[1998]** English language teaching. surabhi publications. Jaipur.
6. शर्मा. भगवान (2006) संस्कृत वाड्.मय में हास्य व्यंग्य
7. मित्तल संतोष : संस्कृत शिक्षण , आर लाल बुक डिपो मेरठ।

**** Corresponding Author***

नीलम तिवारी, *शोधार्थी*

डॉ. रचना राठौड़, *एसोसिएट प्रोफेसर*

लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, डबोक

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विश्वविद्यालय) उदयपुर

Email-neelampankaj9414@gmail.com, Mob.-7014089159